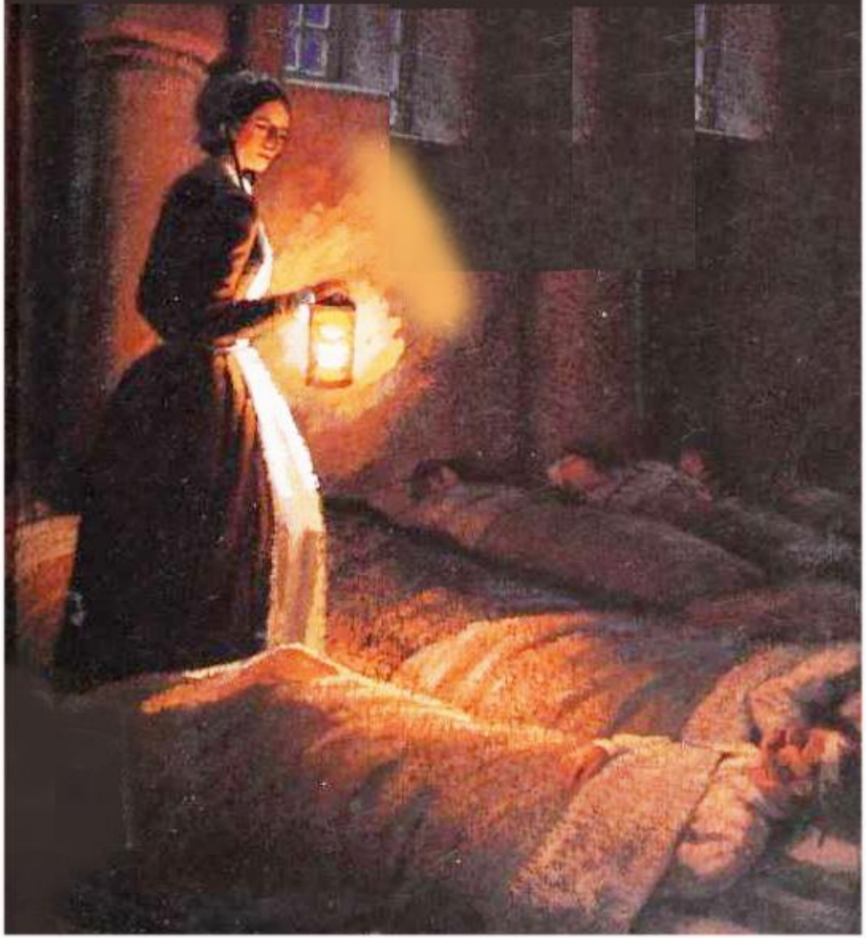
# फ्लोरेंस नाइटिंगेल

शैनन ज़ेमलिका

चित्र: निकोलस डेबन



# फ्लोरेंस नाइटिंगेल

शैनन ज़ेमलिका

चित्र: निकोलस डेबन





## एक असामान्य लड़की

## इंग्लैंड, 1826

फ़्लो ने एक गुड़िया की बांह के चारों ओर एक स्लिंग बांधा.

बेचारी गुड़िया गिर गई थी.

एक अन्य गुड़िया को पट्टी की जरूरत थी.

फ़्लो के लिए वो एक व्यस्त दिन था.

उसकी सभी 18 गुड़ियों को नर्सिंग की जरूरत थी.

गुड़ियों की सेहत बहाल करने में उसे उनकी मदद करनी थी.

इंग्लैंड में ज्यादातर लड़कियों के पास इतनी गुड़िया नहीं होती थीं.

लेकिन छह साल की फ्लोरेंस नाइटिंगेल आम लड़कियों की तरह नहीं थी.

उसका परिवार बहुत अमीर था.

नाइटिंगेल परिवार के पास दो विशाल घर और बहुत सारी जमीन थी.

उनके पास काम करने के लिए तमाम नौकर थे.

फ़्लो और उसकी बहन पार्थ के पास टट्टू और आकर्षक पोशाकें थीं.

उनके पास वे सभी गुड़िए और खिलौने थे जो वे चाहते थे.

जैसे-जैसे फ़्लो बड़ी हुई, उसने यह सीखा कि ज़्यादातर लोग नाइटिंगेल परिवार की तरह नहीं रहते थे.

अधिकांश लोगो मेहनत-मज़दूरी करते थे.

वे छोटे घरों में, भीड़भाड़ वाली बस्तियों में रहते थे.

कभी-कभी फ़्लो की माँ उसे आसपास रहने वाले गरीब घरों में घुमाने ले जाती थीं.

लेकिन ज्यादातर समय नाइटिंगेल परिवार आनंद मनाता था.

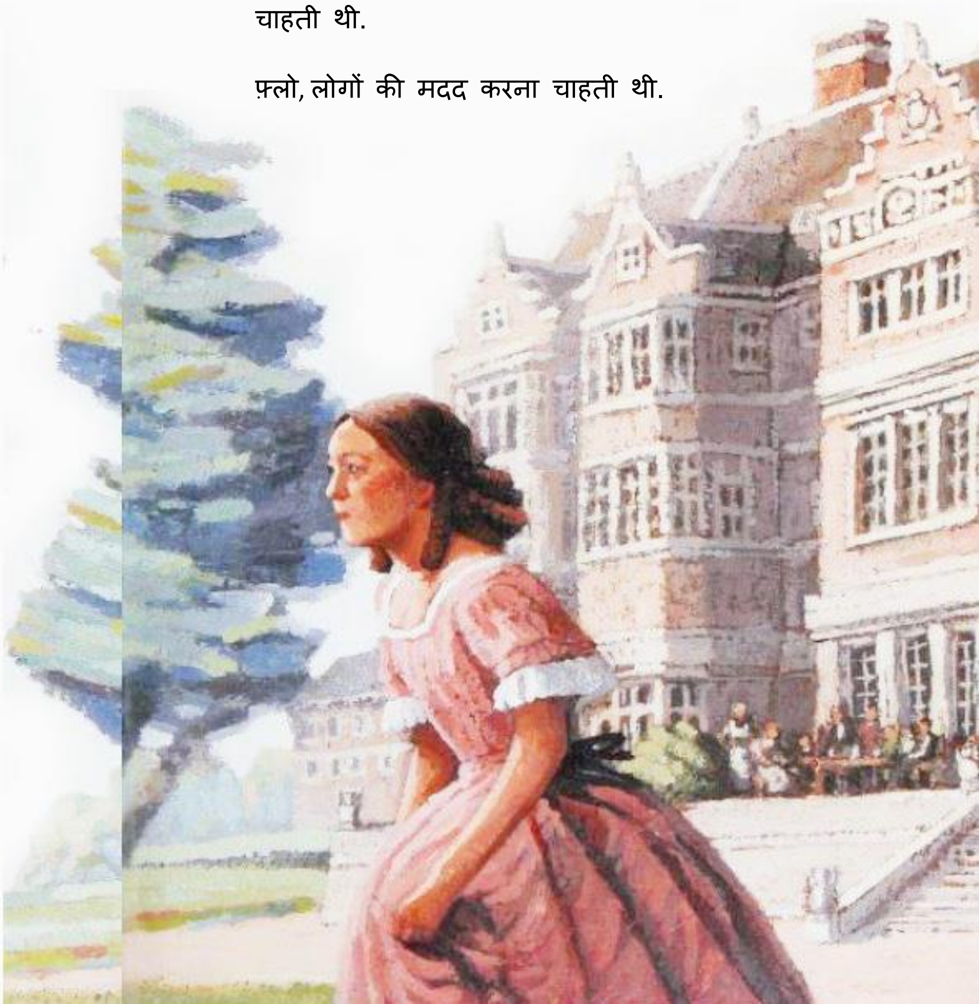
वे पार्टियों और संगीत कार्यक्रमों में जाते थे.

वो पत्र लिखते थे और किताबें पढ़ते थे.

फ़्लो को छोड़कर परिवार में बाकी सभी लोग खुश थे.

पर फ़्लो मौज-मस्ती के अलावा कुछ और करना चाहती थी.

फ़्लो, लोगों की मदद करना चाहती थी.



फ़्लो अपने आसपास के लोगों की पीड़ा से चिंतित होती थी.

वो जिन गरीब लोगों से मिलने जाती, वे अक्सर बीमार रहते थे.

फिर, जब वो नौ वर्ष की हुई, तब बीमारी ने फ़्लो के परिवार को आ घेरा.

उसका चचेरा भाई बोनी इतना बीमार हुआ कि डॉक्टर भी उसकी मदद नहीं कर पाए.



बोनी ने बहादुर बनने की कोशिश की, लेकिन उसके लिए वो बहुत मुश्किल था.

अंत में, बोनी की मृत्यु हो गई.

दुनिया में कितनी बीमारी और दर्द था तब फ़्लो को उसका एहसास हुआ.

वो लोगों की मदद के लिए क्या कर सकती थी?

फ़्लो जानती थी कि उसके माता-पिता यह नहीं चाहेंगे कि वो अपना जीवन लोगों की मदद करते हुए बिताए.

उन्हें उम्मीद थी कि फ़्लो भी अपनी मां की तरह जीवन जिएगी.

जब वो बड़ी होगी, तो उसकी किसी अमीर आदमी से शादी होगी और फिर फिर वो अपने परिवार का पालन-पोषण करेगी.

फिर फ़्लो एक बड़े घर में रहेगी और मौज-मस्ती करेगी.

फ़्लो अपने परिवार से बहुत प्यार करती थी.

लेकिन उसे जीवन भर मौज-मस्ती करने के विचार से नफरत थी.

क्योंकि दुनिया में तमाम पीड़ित लोग थे.

एक दिन जब फ़्लो 16 साल की हुई, तब कुछ अजीब हुआ.

वो अपने परिवार के सर्दियों वाले घर में देवदार के दो पेड़ों के नीचे बैठी थी.

वो शांत स्थान अकेले बैठने के लिए उसकी पसंदीदा जगहों में से एक थी.

अचानक, उसे महसूस हुआ कि वो बिल्कुल अकेली नहीं थी.

एक अजीब सी आवाज उससे कुछ कह रही थी.

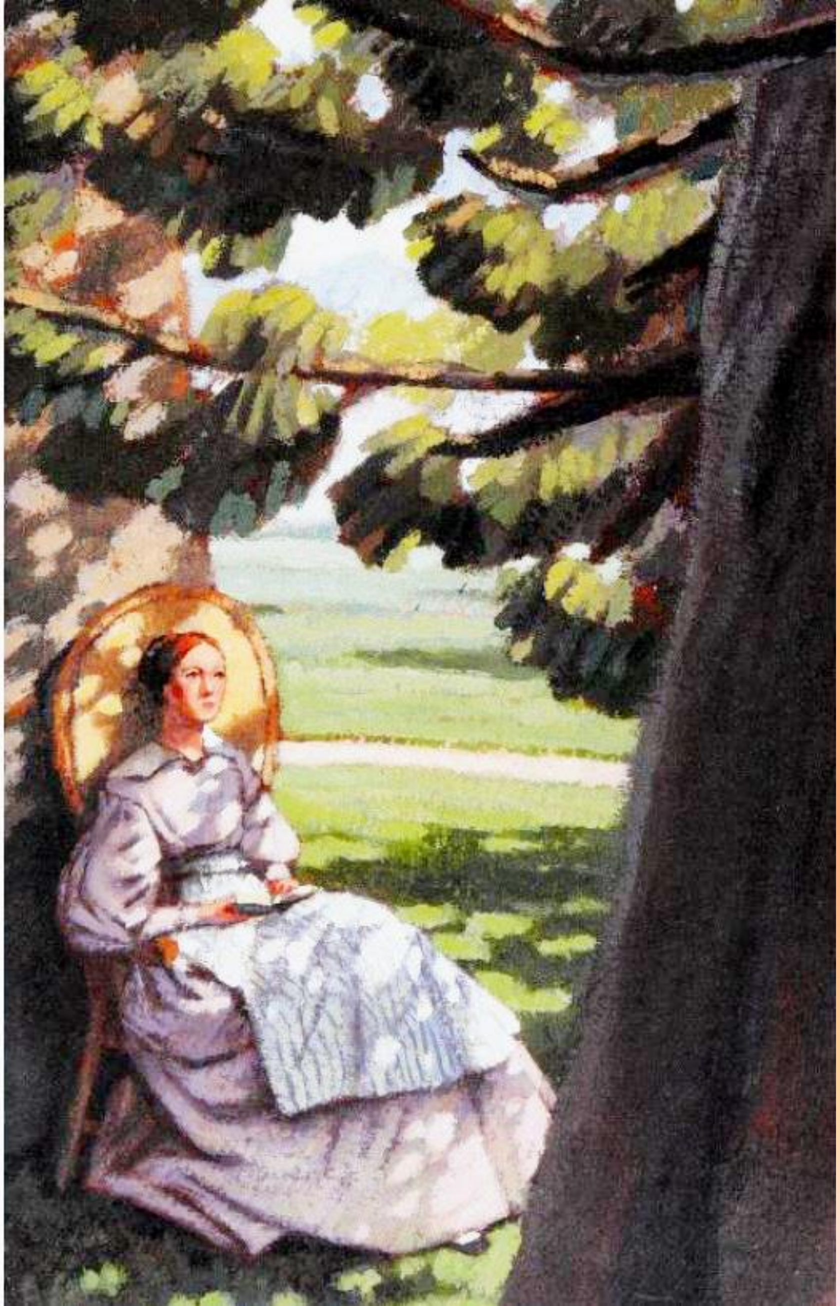
उस आवाज़ ने फ़्लो से लोगों की सेवा करने को कहा.

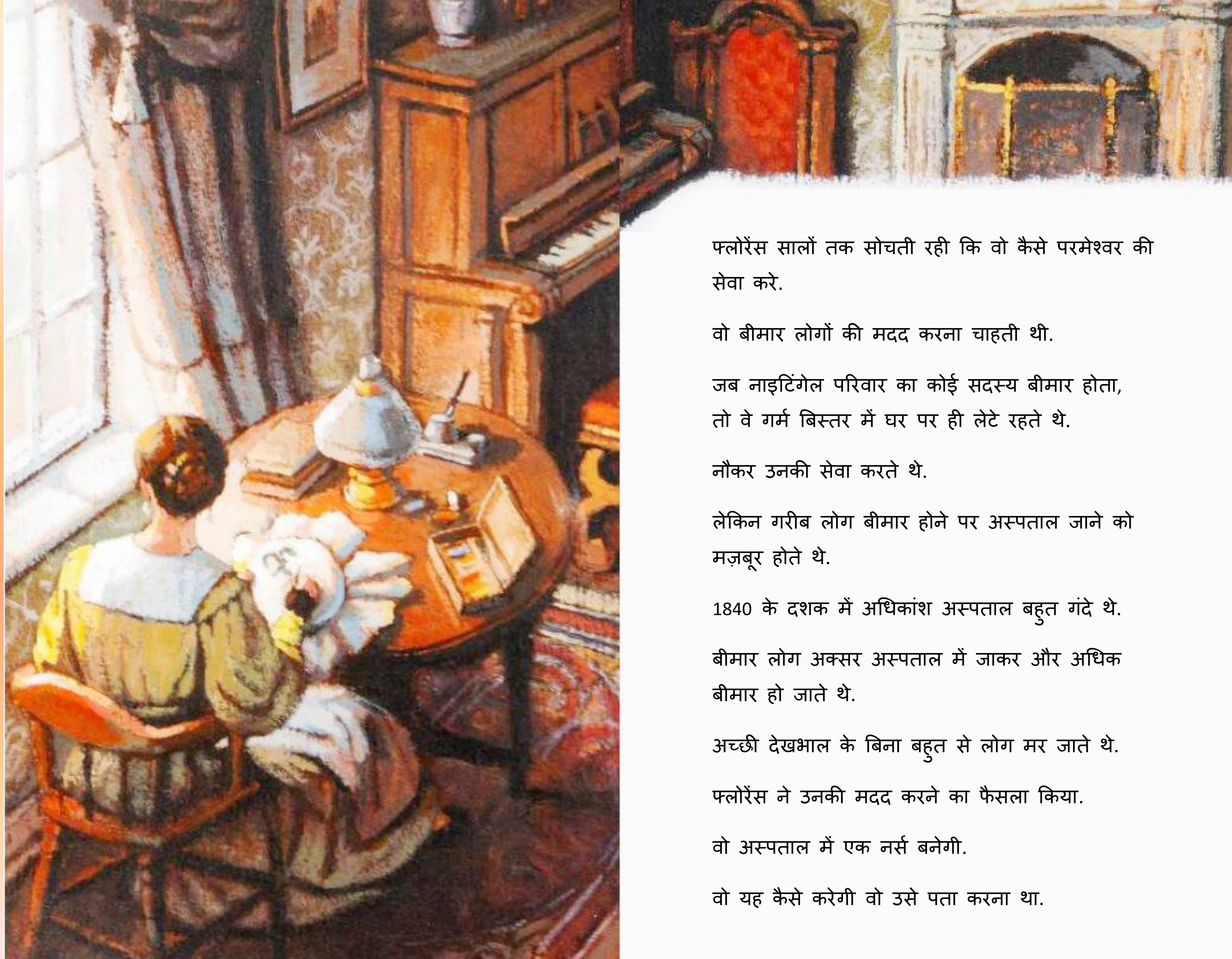
फ़्लो को यकीन था कि वो भगवान की ही आवाज़ थी.

उसे यह नहीं पता था कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहता थे.

लेकिन वो एक बात जरूर जानती थी.

वो अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार जीना नहीं चाहती थी.





फ्लोरेंस सालों तक सोचती रही कि वो कैसे परमेश्वर की सेवा करे.

वो बीमार लोगों की मदद करना चाहती थी.

जब नाइटिंगेल परिवार का कोई सदस्य बीमार होता, तो वे गर्म बिस्तर में घर पर ही लेटे रहते थे.

नौकर उनकी सेवा करते थे.

लेकिन गरीब लोग बीमार होने पर अस्पताल जाने को मज़बूर होते थे.

1840 के दशक में अधिकांश अस्पताल बहुत गंदे थे.

बीमार लोग अक्सर अस्पताल में जाकर और अधिक बीमार हो जाते थे.

अच्छी देखभाल के बिना बहुत से लोग मर जाते थे.

फ्लोरेंस ने उनकी मदद करने का फैसला किया.

वो अस्पताल में एक नर्स बनेगी.

वो यह कैसे करेगी वो उसे पता करना था.



# एक संघर्ष
## दिसंबर 1845

फ्लोरेंस ने अपनी मां और बहन को बताया कि वो नर्सिंग की पढ़ाई करना चाहती है.

वो सुनकर फैनी नाइटिंगेल ने ज़मीन पर अपने पैर पटके.

पार्थ सोफे पर गिर पड़ीं और सुबकने लगीं.

वे इसके लिए कभी राज़ी नहीं होंगे!

उन्हें लगा जैसे फ्लोरेंस ने अपना दिमाग खो दिया हो.



फैनी ने फ्लोरेंस को याद दिलाया कि अस्पताल भयानक स्थान थे.

संभ्रांत महिलाएं कभी भी नर्सें नहीं बनती थीं.

उनमें से कई नर्सें शराब पीती थीं.

इससे भी बदतर, नर्सों को अपने रोगियों को नहलाना और उनके कपड़े बदलने पड़ते थे.

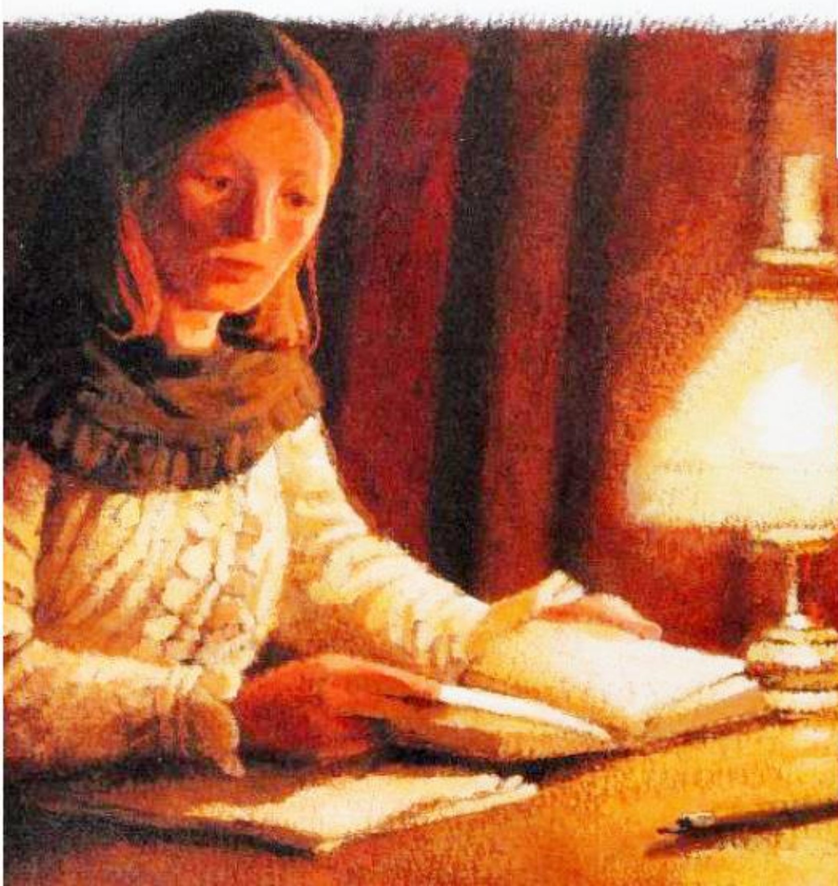
और उनके कई मरीज पुरुष होते थे!

फ्लोरेंस के पिता भी सदमे में थे.

उन्होंने अपनी बेटी को आकर्षक और स्मार्ट बनने के लिए पाला था.

उन्होंने अपनी बेटी के लिए एक अच्छा पति खोजने के लिए उसकी परवरिश की थी.

उनकी बेटी इतनी कृतघ्न कैसे हो सकती थी?



फ्लोरेंस पहले से कहीं ज्यादा दुखी थी.

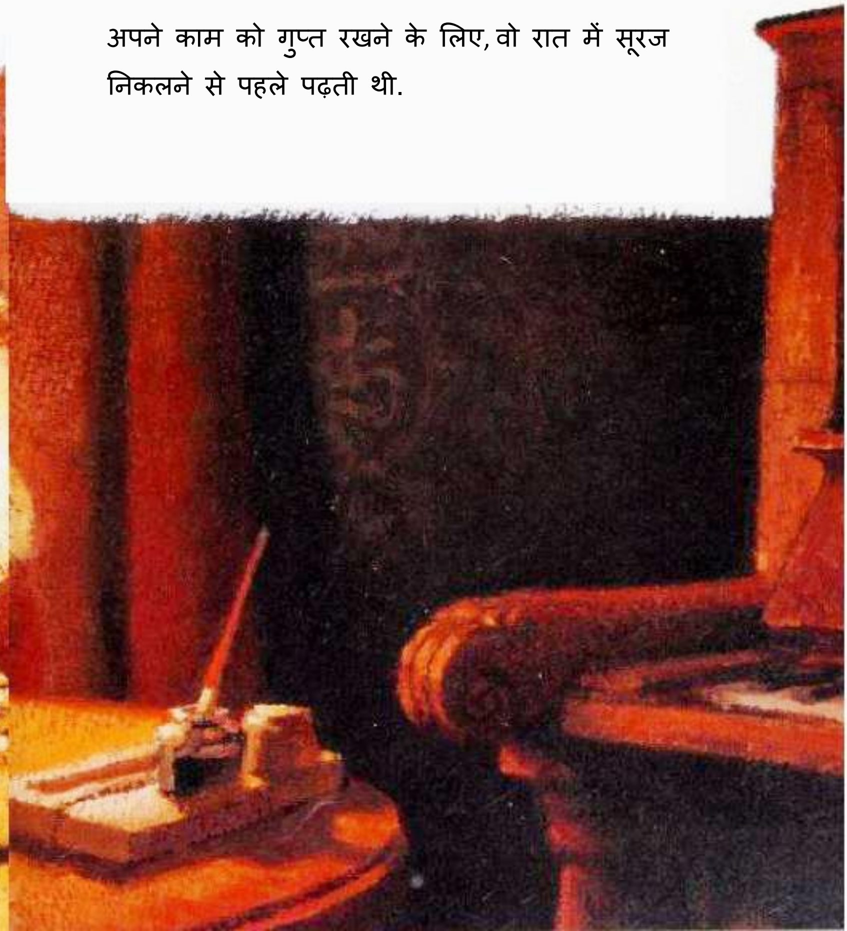
वो अपने परिवार को कभी नाराज़ नहीं कर सकती थी.

वैसा करना सही भी नहीं था.

फिर भी उसने हार नहीं मानी.

वो अस्पतालों के बारे में पढ़ने लगी.

अपने काम को गुप्त रखने के लिए, वो रात में सूरज निकलने से पहले पढ़ती थी.



इस तरह पांच साल बीत गए.

फ्लोरेंस 29 साल की हुई. पर अब उसकी स्थिति पहले से कहीं ज्यादा दयनीय थी.

फिर वो अपने दो दोस्तों के साथ घूमने निकल गई.

जर्मनी में, उसने एक नर्सिंग स्कूल जाकर देखा.

कैसरवर्थ में, दर्जनों महिलाएँ बीमारों की देखभाल करना सीख रही थीं.

फ्लोरेंस को वे आदर्श महिला लगीं.

उनसे मिलकर फ्लोरेंस को एक उपयोगी जीवन जीने की अपना सपना याद आया.



घर वापस आकर, फ्लोरेंस ने एक कठिन निर्णय लिया.

परिवार की अवज्ञा करना गलत था.

लेकिन परिवार को खुश करने के लिए खुद की ज़िंदगी बर्बाद करना और भी बुरा था.

उसने कैसरवर्थ वापस जाने का फैसला किया.

वो खबर सुनकर फैनी और पार्थ भड़क उठीं.

लेकिन फ्लोरेंस ने अपना मन नहीं बदला.

1851 में उसने तीन महीने तक नर्सिंग का प्रशिक्षण लिया.

उसने घावों की मलहम-पट्टी करना और लोगों को दर्द में आराम पहुँचाना सीखा.

बाद में, वापस इंग्लैंड में, फ्लोरेंस को महिलाओं के लिए एक अस्पताल चलाने का काम मिला.

1853 में उसने अपना नया काम शुरू किया.

आख़िरकार वो बीमारों की मदद कर रही थी!

फ्लोरेंस को अस्पताल में महिलाओं की देखभाल करना बहुत पसंद था.

लेकिन जल्द ही उसने भविष्य के बारे में सोचा.

क्या वो लोगों की मदद करने के लिए कुछ और कर सकती थी?



1854 के अगस्त में फ्लोरेंस को अपने प्रश्न का उत्तर मिला.

इंग्लैंड ने रूस के खिलाफ युद्ध छेड़ा था.

युद्ध में हजारों सैनिक घायल हुए थे.

तमाम सैनिक बीमार और जखमी थे.

सेना को उनकी देखभाल के लिए लोगों की सख्त जरूरत थी.

फ्लोरेंस के दोस्त सिडनी हर्बर्ट एक उच्च स्तरीय सरकारी अफसर थे.

फ्लोरेंस ने मदद के लिए उन्हें लिखा.

क्या फ्लोरेंस, नर्सों का एक समूह लेकर वहां जाएगी?

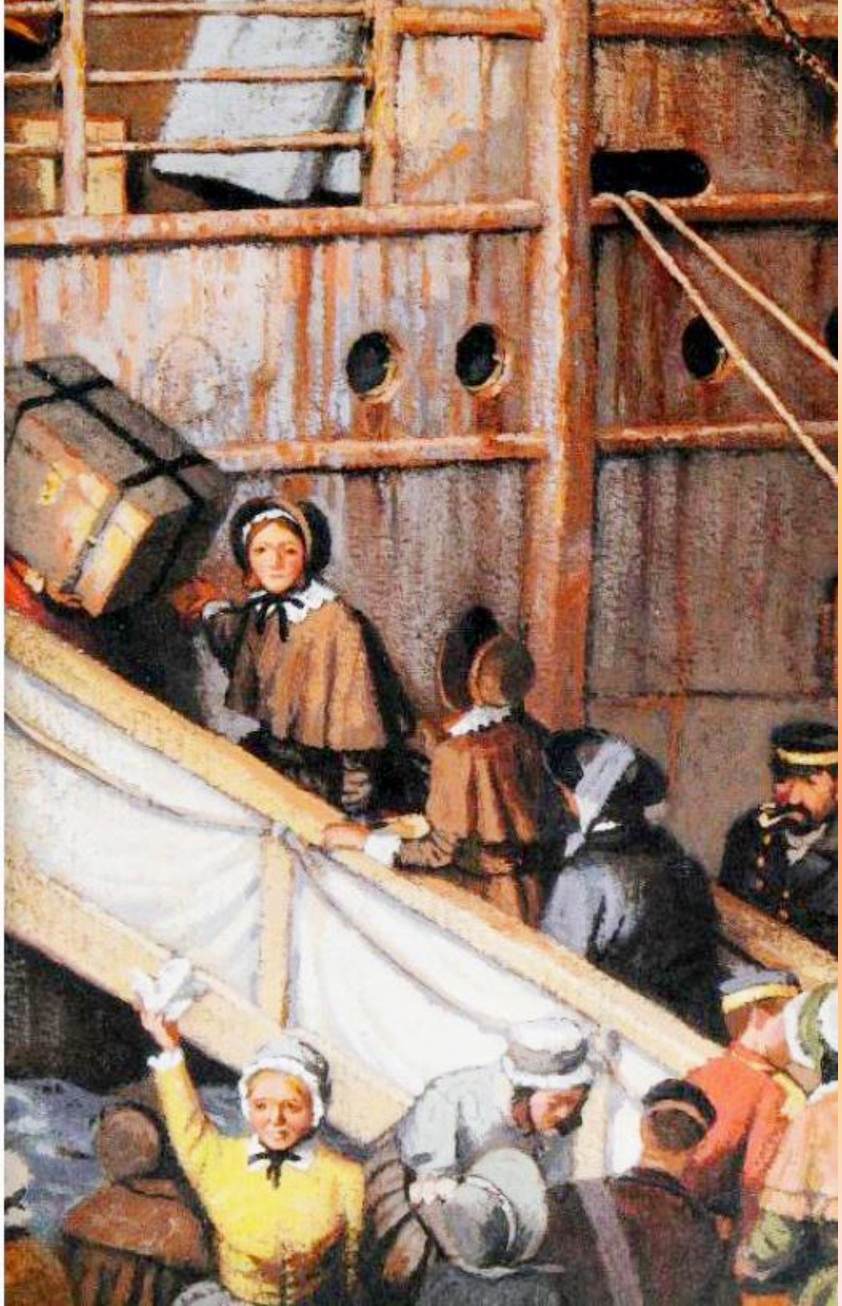
काम बहुत कठिन होगा.

उसे तुर्की नामक देश में जाना होगा जो इंग्लैंड से से बहुत दूर था.

फ्लोरेंस को पता था कि उसे वो काम करना ही होगा.

उसने कई नर्सों को काम पर रखा और अपना बोरिया-बिस्तरा बाँधा.

वो युद्ध में काम करने के लिए जा रही थी.





## युद्ध नर्स
## स्कूटरी, तुर्की
## 5 नवंबर, 1854

फ्लोरेंस को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ.

उसे पता था कि बैरक अस्पताल को नर्सों की जरूरत थी.

लेकिन अब उसने जो कुछ देखा उसे उसकी उम्मीद नहीं थी.

अस्पताल में पलंग नहीं थे.

घायल सैनिक फर्श पर पड़े थे.

सैनिकों को गर्म रखने के लिए साफ कंबल नहीं थे.

उनके घावों को ढकने के लिए साफ पट्टियां नहीं थीं.

और दवायें बहुत कम थीं.

फिर फ्लोरेंस ने और भी बुरी खबरें सुनीं.

वहां के डॉक्टर फ्लोरेंस की मदद नहीं चाहते थे!

सेना में कभी भी महिला नर्सें नहीं थीं.

डॉक्टर नहीं चाहते थे कि कोई अमीर महिला उन्हें मरीज़ों का इलाज करना बताए.

फ्लोरेंस और उसकी नर्सें, घायल सैनिकों को दर्द से कराहते हुए सुन सकती थीं.

लेकिन वे मदद नहीं कर सकीं.

उसकी जगह उन्होंने कमीजें सिलीं और पट्टियां बनाईं.



लेकिन 9 नवंबर को सब कुछ बदल गया.

तमाम जहाज स्कूटरी में आए.

हर जहाज़ बीमार और घायल लोगों से भरा था.

डॉक्टरों के पास अब नर्सों के महिला होने की चिंता करने का समय नहीं था.

अब उन्हें हर हाथ की जरूरत थी.

फ्लोरेंस और नर्सें काम पर लग गईं.

उन्होंने मरीज़ों को नहलाया और उनके घावों पर पट्टी बाँधी.

उन्होंने लेटने के बिस्तर बनाने के लिए बोरियों में पुआल भरा.

रात में भी फ्लोरेंस ने आराम नहीं किया.

वो एक लैम्प लेकर मरीज़ों के बिस्तरों के बीच चली.

उसने मरीज़ों को दिलासा दिलाई कि वे जल्दी ठीक हो जाएंगे.



फ्लोरेंस जब नर्सिंग नहीं कर रही होती थी तो वो खुद से कठिन सवाल पूछती थी.

उसे समझ में आने लगा कि अस्पताल इतने खराब क्यों थे.

सेना के पास सप्लाई खरीदने के लिए पैसे थे.

लेकिन कोई भी इस बात पर सहमत नहीं था कि ज़रुरत की चीज़ें कौन खरीदे.

अगर कोई अधिकारी गलती से पैसा खर्च करता, तो वो मुश्किल में पड़ जाता था.

लेकिन फ्लोरेंस अपने खुद के पैसे खर्च कर सकती थी.

उसे मुश्किलों से डर नहीं लगता था.

इसलिए उसने खुद ही सप्लाई खरीदीं.

उसने शर्ट और मोज़े, कांटे और चाकू, तौलिये और साबुन ख़रीदे.





धीरे-धीरे बैरक का अस्पताल पहले से बेहतर होता गया.

सैनिकों को पता था कि वो किसे धन्यवाद दें - फ्लोरेंस नाइटिंगेल को.

जब फ्लोरेंस नाइटिंगेल उनके बिस्तर के पास से गुज़रती थी तो वे उसकी छाया को चूमते थे.



फ्लोरेंस ने अन्य समस्याओं को भी हल किया.

कोई भी फर्श और दीवारों की सफाई नहीं कर रहा था.

वो खून, मिट्टी और कीचड़ से ढंके थे.

फ्लोरेंस ने उन्हें रगड़ने के लिए ब्रश खरीदे.

नर्सों ने खुद अस्पताल की सफाई की.

कोई भी सैनिकों के कपड़े नहीं धो रहा था.

फ्लोरेंस ने उस काम को करने के लिए सैनिकों की पत्नियों को पैसे दिए.

जैसे-जैसे फ्लोरेंस ने अपना अच्छा काम दिखाया,

वैसे-वैसे डॉक्टरों ने उस पर भरोसा करना शुरू कर दिया.

लेकिन वो सभी को पसंद नहीं आई.

अस्पताल चलाने वाले सैनिक अधिकारी उससे शर्मिंदा थे.

यह साफ़ ज़ाहिर था कि उन्होंने अपना काम बेहद खराब तरीके से किया था.

कुछ नर्सें भी फ्लोरेंस को पसंद नहीं करती थीं.

फ्लोरेंस सैनिकों के प्रति दयालु थीं, लेकिन नर्सों के साथ बहुत सख्त थीं.

दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचते थे उसकी फ्लोरेंस को परवाह नहीं थी.

उसे अपने काम की ज़्यादा फिक्र थी.

मई 1855 में फ्लोरेंस ने सेना के अन्य अस्पतालों का दौरा किया.

उसने उन्हें भी गंदगी से भरा हुआ और बुरी हालत में पाया.

फ्लोरेंस के दिमाग में कई नए विचार आए.

वो इन अस्पतालों को और बेहतर बना सकती थी, जैसा कि उसने स्कूटरी में किया था.



लेकिन इससे पहले कि वो शुरू कर पाती, फ्लोरेंस खुद बीमार पड़ गई.

वो मरते-मरते बची.

फ्लोरेंस स्कूटरी वापस चली गई.

उसे वहां पर हफ्तों आराम करना पड़ा.

लेकिन वो अपने घर इंग्लैंड वापिस नहीं गई.

उसे स्कूटरी में अभी बहुत काम करना बाकी था.

फ्लोरेंस समस्याओं को सुलझाती रही.

जब सैनिक ठीक हो जाते, तब उनके पास कुछ उपयोगी काम करने को नहीं होता था.

इसलिए वो दिन भर शराब पीते रहते थे.

बहुत शराब पीने से वे दुबारा फिर बीमार पड़ जाते थे.

फ्लोरेंस ने सैनिकों के लिए स्कूल शुरू करने के लिए शिक्षकों को खोजा.

फिर सैनिक शराब पीने के बजाए कक्षाओं में गए.

उन्होंने गीत गाना सीखे.

उन्होंने नाटकों और फुटबॉल मैचों का आयोजन किया.





1856 में, इंग्लैंड ने रूस के साथ शांति स्थापित की.

क्रीमिया युद्ध समाप्त हो गया.

जैसे-जैसे स्कूटरी के बीमार सैनिक ठीक हुए
वे अपने-अपने घर चले गए.

जुलाई तक, सभी सैनिक चले गए थे.

फ्लोरेंस भी घर चली गई.

उसने यह साबित करके दिखाया कि महिलाएं भी अच्छी
युद्ध नर्स बन सकती थीं.

उसने हजारों सैनिकों की मदद की थी.

फिर भी वो एक तरह की विफलता महसूस कर रही थी.

वो केवल उन हजारों मरीज़ों के बारे में सोच रही थी
जिनकी सेना के अस्पतालों में मौत हो गई थी.

क्या लोग अस्वस्थ अस्पतालों में इसी तरह मरते रहेंगे?

फ्लोरेंस उस तस्वीर को बदलने के लिए क्या कर सकती थी?



## काम जारी रहता है

## इंग्लैंड, अगस्त 1856

फ्लोरेंस अपनी मेज को देखकर चकित हुईं.

इतनी सारी डाक और पत्र!

पार्थ ने एक पत्र के बाद दूसरे पत्र को जोर से पढ़ा.

एक महिला का पत्र था जिसे नौकरी की जरूरत थी.

एक आदमी का पत्र था जो फ्लोरेंस से शादी करना चाहता था!

इंग्लैंड में सभी ने फ्लोरेंस के अद्भुत काम के बारे में सुना था.

अब वो एक हीरो बन गई थी.

फ्लोरेंस हीरो नहीं बनना चाहती थी.

वो शादी नहीं करना चाहती थी.

वह केवल सैनिकों की मदद करती रहना चाहती थी.



स्कूटरी में लंबे महीनों ने उन्हें बहुत बीमार बना दिया था.

अक्सर वो अपना कमरा तक नहीं छोड़ पाती थी.

लेकिन वो अभी भी अस्पतालों को बेहतर बनाने के लिए काम कर सकती थी.

उसने अपने विचारों को समझाने के लिए सरकार को पत्र और रिपोर्ट लिखीं.

उसने बैठकें आयोजित कीं.

कभी-कभी वो 22 घंटे काम करती थीं.

फ्लोरेंस ने 1860 में, नर्सों के लिए एक स्कूल भी खोला.

छात्र, लंदन के एक अस्पताल में साथ-साथ रहते थे.

फ्लोरेंस उन्हें खुद ट्रेनिंग देने के लिए बहुत बीमार थीं.

लेकिन फ्लोरेंस ने उन्हें लिखा और उनसे मुलाकात की.

अपने स्कूल की नर्सों को दुनिया भर के अस्पतालों में काम करते हुए देख उसे बहुत गर्व हुआ.

बहुत साल बीत गए पर फ्लोरेंस अभी भी काम कर रही थीं.

उनके प्रयासों की बदौलत सेना और ब्रिटिश उपनिवेश भारत की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ.

1893 में, फ्लोरेंस 73 वर्ष की हुईं.

वो अंत में आराम करने लगीं.

बेशक, वो अभी भी कुछ काम करती थीं.

लेकिन अब वो अपने जीवन को पीछे मुड़कर देख सकती थीं और अपने अच्छे काम को निहार सकती थीं.

एक लड़की के रूप में, उन्हें बहुत ज्यादा मौज़-मस्ती करना गलत लगता था.

लेकिन अब वो किताबें पढ़ती थीं और बहुत सारे लोग उनसे मिलने आते थे.

वो अपनी पालतू बिल्लियों के साथ खेलती थीं.

बहुत सालों तक काम करने के बाद, फ्लोरेंस नाइटिंगेल आखिरकार कुछ आराम कर सकीं.





# अंत के शब्द

फ्लोरेंस का 1910 में, 90 वर्ष की आयु में निधन हुआ. वो अपने पीछे सुरक्षित, स्वच्छ अस्पताल छोड़ गयीं जहां प्रशिक्षित नर्सों ने रोगियों की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कई देशों के अस्पतालों ने उनके विचारों को अपनाया. उसके परिणामस्वरूप तमाम लोगों की जानें बचीं.

फ्लोरेंस, महिलाओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण बदलाव लायीं. जब उन्होंने अपना काम शुरू किया, तो महिलाओं के पास पैसे कमाने के बहुत कम अवसर और तरीके थे. जो महिलाएं नर्सें बनीं, उन्हें अक्सर तिरस्कार और शर्म का सामना करना पड़ा, जिसे नाइटिंगेल ने खुद भी महसूस किया. लेकिन क्रीमिया युद्ध में फ्लोरेंस की सफलता के बाद, अधिक लोग नर्सिंग को एक सम्मानजनक पेशे के रूप में देखने लगे. जब फ्लोरेंस ने अपना स्कूल खोला, तो उन्होंने ब्रिटिश महिलाओं के लिए एक नया दरवाज़ा खोल दिया.

फ्लोरेंस नाइटिंगेल के लिए आरामदायक जीवन जीना, काफी आसान होता. उसकी बजाए, उन्होंने दूसरों की मदद करने के लिए कड़ी मेहनत की. उपयोगी काम करने का उनका संकल्प पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बना.

# महत्वपूर्ण तिथियाँ

1820— फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म 12 मई को फ्लोरेंस, इटली में हुआ

1821— सपरिवार इंग्लैंड लौटीं

1837— उन्होंने परमेश्वर की आवाज़ सुनी. परमेश्वर ने उन्हें दूसरों की सेवा करने का आवाहन दिया

1845— नर्सिंग की पढ़ाई का विचार परिवार ने नकारा

1850— जर्मनी में कैसरवर्थ का दौरा किया

1851— प्रशिक्षण के लिए कैसरवर्थ लौटीं

1853— एक महिला अस्पताल चलाने के लिए पहली नौकरी की

1854— क्रीमिया युद्ध में सैनिकों की देखभाल के लिए स्कूटरी, तुर्की में, नर्सों के समूह का नेतृत्व किया

1856—इंग्लैंड लौटीं और फिर अस्पतालों को बेहतर बनाने के लिए काम शुरू किया

1860— लंदन में नर्सों के लिए नाइटिंगेल ट्रेनिंग स्कूल खोला

1910— 13 अगस्त को लंदन, इंग्लैंड में निधन.

